

श्रीमच्छास्त्रोक्तिः
श्रीमच्छास्त्रोक्तिः

2222 I

263
qola vajra
Bhivocalla
vidua.



॥ वाचां यथा ॥

३ प्रतिज्ञा

[illegible]

अथ जल यज्ञ मन्त्र विवर्तने मन्त्र सवलि
 विय ॥ यथा केयुल म. दृष्टया व विव
 ॥ भावा ध्यान मन्त्रार्थ. न्यास मन्त्र नमस्का
 प्रणमय जीन न्यासार्थ याग मन्त्र ॥ गारा
 म. वलि विय ॥ ॐ सर्व विधि कृष्णः सर्व
 तन्त्रय वलि मन्त्र २०० ॥ ॐ जून का दिवः
 नून नाग नाग मन्त्र ॥ ॐ ह मि द ग वि
 य म य ग य मि व द क ओ मि नी सर्व द व
 यो वलि मन्त्र २०० ॥ वद ॥ ॐ घृत घृत ॥
 ॐ गुरु मन्त्रा ना ॥ ॐ यस्तु ता ना ॥ ॐ नम
 म् ॥ सर्व ॥ यस्तु न वलि विय ॥ ॐ सर्व
 विधि निवान ल य जल यज्ञ मन्त्रा कृष्ण
 स्वाहा ॥ चन्द्र ना द न य य धूय दी या न ॥
 जय स्वाहा ॥ ॐ पूर्व द कि म य मि मा रु न
 ॐ ॐ दि मा दि वा टिका न सं स्ति ता न. ह न
 नां व द का टिकां ॥ शुद्ध नू मं डे न व ना र्थ न यो
 म म नं च ग व न म न य मं ॥ का दि स ना
 य हा न. ता न्ना र्थ न य म म वि वि घ्न म न व ल्या दि
 घृजा विर म् ॥ अरु ग म् ॥ ॥

[illegible]

॥ कृष्णरामसयलिंगञ्जामुयसनञ्ज ॥ वरुनि
संयुयालननष्टिष्टिः ॥ ॥ ॥

[illegible]

ॐ नमः कल नमः ॥ ॐ शशाङ्क ललाटे
दि ॥ मूलमन्द ॥ ॐ नमो हरे ॥ विष्णु मन्द ॥
दक्ष निव कल नमः ॥ कि कल नमः ॥
अस्य नमः ॥ ॐ नमः ॥
॥ कल नमः ॥
नमः ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

॥ किनागजाजाय (ध्वनवर्ण) कवि असल
 लसुंदराजजिलिदुर्लभक (गोरा) गुलायः
 युक्तजावर्लकमंदापूयंलकर्मज २ अहाजा
 गालियु २ मत्रलल ३ आ (गु) अहा (ग) लसकु
 गुआऊनसमकुट (गु) कात्रसिंहासनसारका
 लनैवा (गु) कीनागजाजायस्वाहा ॥ ग ॥ वा
 (गु) कीनागजाजस्य (गु) मेयुनेदीसहायाबास
 दुहिरुवास्वाहा (गु) यावाडलयया (गु) अत्रावाक
 म्यायुनसत्रावायुष्टानुयायि (गु) वासलयाक
 कायध (गु) अयमिस्मजुआयिदवर्जय ३ स्वाहा
 ॥ दुर्वाकसदिजे ॥ अरिजनदुग्धनागकु (गु) द
 आ ॥ अकिष्ठाजयफा ॥ (गु) कर्पुनहिमकु
 (गु) न्दु (ध्वनवर्ण) महाबल ॥ सु (ध्वनो) त्यलध
 नीत्र. सहजरागमलितः ॥ वा (गु) कीनागजाजा
 सो महाभा नुस्ववीर्यवान। मायि (गु) नूनजिह
 न. कलयु (गु) मिहीकत्र ॥ आ (गु) यविदिनियत
 यवा (गु) कीनागजाजा (गु) नवि (गु) रसमर्द विधिय
 नियु (गु) मसु ॥ रंतिवा (गु) कीनागजा (गु) नवि (गु) ॥

[illegible]

वैश्वसुलसंरुताय जगत्पदं किं नमः
 नायत्तविरुजितकालात्कमद्ययुधैव
 र्भय २ अहो नागविद्युत् २ मृत् २ लेले २ द
 किंदिमिआसकुरुवाजनेः समुद्र ट
 सगुंभत्रमिहासनेकः सालंकातेनेतद
 कोनागनाजायस्वाहा ॥ ~~मम~~ ॥ मद्रकोना
 गनाजस्यसयुक्तसरायासदुहिरुर्वास्वराः
 (गुणवाप्तप्रगोवाटुलययाध्विगतावायुतः
 म्प्रगोवायुहानुयायिनावायटीवायटको
 वायुलयात्कालेनयध्वनिस्म ॥ ~~ॐ~~ द
 नीवर्षय २ स्वाहा ॥ ~~दूर्वाकर्म~~ क्रिय ॥ ~~मंख~~
~~नदुर्धनाग~~ ~~कुरु~~ ~~दुष्ट~~ ॥ ~~यमिहाजाय~~ ॥
~~मो~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~आ~~ ~~मि~~ ~~मी~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~हा~~ ~~का~~ ~~यः~~ ~~का~~ ~~प्र~~ ~~नः~~
 युक्तिर्मानिरः ॥ ~~न~~ ~~र~~ ~~वा~~ ~~स्व~~ ~~कि~~ ~~क~~ ~~ना~~ ~~ज~~ ~~न~~ ~~रु~~ ~~मि~~
 न ~~अ~~ ~~न~~ ~~लो~~ ~~च~~ ~~न~~ ॥ ~~आ~~ ~~न~~ ~~व~~ ~~क~~ ~~म~~ ~~म~~ ~~मी~~ ~~व~~ ~~नि~~
 प्रायत्तविरुजितः ॥ मद्रकोनामनागमयं
 वृष्टिं कृत्वा मही गले ॥ दक्षिदिनिधनयः
 मद्रकोनागनाजायुर्नविश्वेनसर्वविधि
 यत्रियुर्धुमम् ॥ ~~ॐ~~ ~~मि~~ ~~म~~ ~~द्र~~ ~~को~~ ~~ना~~ ~~ग~~ ~~म~~ ~~वि~~ ~~वि~~

॥ ~~अथ~~ ~~म~~ ~~ह्य~~ ~~म~~ ~~क~~ ~~को~~ ~~ट~~ ~~क~~ ~~ना~~ ~~ग~~ ~~म~~ ~~उ~~ ~~न~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~क~~ ~~को~~
 टकनागनाजायविनकादत्रीगिकिसहिताः
 अ ~~ॐ~~ ~~द~~ ~~मा~~ ~~स~~ ~~न~~ २ ॥ ~~आ~~ ~~वा~~ ~~ह~~ ~~ना~~ ~~दि~~ ~~ध~~ ~~म~~ ~~न~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~नी~~
 लककोटकः कणुः रुमत्रिकटमस्तक ॥ क
 वृषवा रुयाध्वनं धोत्रदंष्ट्रायुगो अमां ॥ ~~ॐ~~
 कावलीनदी २ ॥ ~~ॐ~~ ~~म~~ ~~नो~~ ~~द~~ ~~त्री~~ ~~न~~ ~~लि~~ ~~कृ~~ ~~य~~ ॥ ~~ॐ~~
 घुनखादसमुदाय २ ॥ ~~ॐ~~ ~~घु~~ ~~न~~ ~~र~~ ~~नी~~ ~~ना~~ ~~म~~ ~~ना~~
 सअर्गावि (वेष्टे) वेष्टे मनामयुहिः दुर्कः
 स्वमीययसायिसमनास्मात्सीनययसाय
 उदुस्व ॥ ~~ॐ~~ ~~क~~ ~~नी~~ ~~दी~~ ~~वा~~ ~~य~~ २ ॥ ~~ॐ~~ ~~रु~~ ~~वि~~ ~~म~~ ~~नी~~
 त्रिमा आधोह विष्मा दुन्दुवो नृध्वगोहवि
 म्मा दुं अमृत् अः ॥ ~~ॐ~~ ~~क~~ ~~को~~ ~~ट~~ ~~क~~ ~~ना~~ ~~ग~~ ~~ना~~ ~~जा~~
 यविनकादत्रीगिकिसहिताय २ ॥ ~~अ~~ ~~न~~ ~~द~~ ~~ना~~

कुरुययध्वयदीयनेत्रज ॥ ~~य~~ ~~वा~~ ~~य~~ ~~न~~ ~~म~~ ~~द~~
~~दुर्ध~~ ~~म~~ ~~न~~ ॥ ॥ ~~द~~ ~~व~~ ~~द~~ ~~व~~ ~~द~~ ~~वा~~ ~~य~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~क~~ ~~को~~
 टकनागनाजायजुतमीयययकागमृदः
 मधुलसंरुतहीलिहर्भं तवदवाहायम
 लां किंयसहायनयानकालेयसंघनृ
 येववर्षयकि ~~ॐ~~ ~~द~~ ~~ानी~~ ~~म~~ ~~वि~~ ~~व~~ ~~र्ष~~ ~~य~~ २ ~~वृ~~ ~~त्~~ ~~२~~
 मृत् २ लेले २ नैमृत्दिमिआसकुरुवाः
 उनसमुद्रसगुंभत्रमिहासनेनकको
 टकोनागनाजायस्वाहा ॥ ~~मम~~ ॥ ~~क~~ ~~को~~
 टकोनागनाजायसयुर्वासरायावास्व
 दुहिरुवास्वरागुमावाटुलययाध्विगताः
 वायुनसगोवायुहानुगमिनावायटीय
 टकोवायुलयात्कालेनयध्वनिस्म ॥ ~~ॐ~~ ~~द~~ ~~ानी~~ ~~म~~ ~~वि~~ ~~व~~ ~~र्ष~~ ~~य~~ २ ~~स्वा~~ ~~हा~~
 हा ॥ ~~दूर्वाकर्म~~ क्रिय ॥ ~~मंख~~ ~~नदुर्धनाग~~
~~म~~ ~~कुरु~~ ~~दुष्ट~~ ॥ ~~यमिहाजाय~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~ॐ~~
 कालो ~~ॐ~~ ~~न~~ ~~ति~~ ~~का~~ ~~द~~ ~~ॐ~~ ~~हा~~ ~~वि~~ ~~म~~ ~~का~~ ~~ला~~ ~~ति~~ ~~ॐ~~
 हीमहाः ॥ कवृषवा रुययुगो मलिनयोः
 कालः रुवी ॥ ~~क~~ ~~को~~ ~~ट~~ ~~को~~ ~~म~~ ~~हा~~ ~~ना~~ ~~ग~~ ~~म~~ ~~हा~~ ~~ॐ~~
 वी अर्थयनाकमः ॥ ~~स~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~क~~ ~~न~~ ~~ॐ~~ ~~म~~ ~~वृ~~ ~~ष्टि~~ ~~ॐ~~ ~~क~~
 गोरु ~~ॐ~~ ~~क~~ ~~म~~ ~~प्रि~~ ~~यः~~ ॥ नैमृत्दिमिगकयेक
 कोटकनागनाजायुर्नविश्वे ॥ ~~ॐ~~ ~~मि~~ ~~क~~ ~~को~~
 टकनागमर्जुनविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ~~अथ~~ ~~य~~ ~~मि~~ ~~म~~ ~~स~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~ना~~ ~~ग~~ ~~म~~ ~~उ~~ ~~न~~ ॥ ~~ॐ~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~ना~~ ~~ग~~
 नाजाय ~~ॐ~~ ~~ॐ~~ ~~ॐ~~ ~~ॐ~~ ॥ ~~क~~ ~~लि~~ ~~नी~~ ~~ग~~ ~~कि~~ ~~स~~ ~~हि~~ ~~ॐ~~
 नाय ~~ॐ~~ ~~द~~ ~~मा~~ ~~स~~ ~~न~~ २ ॥ ~~आ~~ ~~वा~~ ~~ह~~ ~~ना~~ ~~दि~~ ~~ध~~ ~~म~~ ~~न~~ ॥
 ॐ ~~न~~ ~~का~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~नि~~ ~~तः~~ ~~य~~ ~~म~~ ~~ॐ~~ ~~मि~~ ~~न~~ ~~ॐ~~ ~~का~~ ~~य~~ ~~नो~~ ~~द~~
 मः ॥ ~~य~~ ~~प्र~~ ~~ॐ~~ ~~वि~~ ~~दु~~ ~~क~~ ~~सा~~ ~~रा~~ ~~शो~~ ~~ॐ~~ ~~गी~~ ~~वा~~ ~~यो~~ ~~क~~ ~~न~~ ~~ॐ~~
 लक ॐ ॥ ~~ॐ~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~स्व~~ ~~ले~~ ~~न~~ ~~दी~~ २ ॥ ~~ॐ~~ ~~म~~ ~~नो~~ ~~खा~~
 (धेवमयसादवायादागं देमिनाः
 यो वेद नष्टवलायः ॥ ~~म~~ ~~क~~ ~~न~~ ~~या~~ ~~ना~~ ~~य~~
 माग्नीनमनायकनवंगी (धेयान्दीवि

ॐ नमः शिवाय ॥ ३

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

मनः प्रसन्नं वाचं धारयन् आर्द्रं सक्तं न खाद
वर्षासिक्तं गार्तृकं वा वसाथ ॥ ॥ ॥

[illegible]

रुं प्रमः पीमदागलायतय ॥ अथ यर्जित्यसृकविधमर्न ॥ सफडाप्रलेनकला ॥ हृथकनं हिन
कर्मयायस्त्रानसविबलु ॥ सकिक्कवाकषायविमर्धनदीमंगममडाडा ॥ गदवावतस्त्रानअदाग
मुलपुक्क ॥ दाम्पूडाआलंमालकीडाडा ॥ नदीस्त्रानयादाडा ॥ निथपूजामालकीधनक ॥ अतिर्ण
गुह्णमापुनतियाडा ॥ वतनसिअ वृणार्जगुनिक ॥ नदीस ॥ लखस ॥ पालिमोणताचकं ॥ पीठिका
सेनेवान ॥ पूव्होहिमखावाउयनाहिमखोवा ॥ हवनेनागकुंछा ॥ य ॥ तवधीकयानदिन ॥ वनू ॥ बव
दाअगुडीखअर्धयाउयाअ ॥ पूजनंआउम ॥ ॥ सिकल्यः ॥ ॐ अयादि ॥ अया ॥ अनादृष्टिदायव
नामनसुदृष्टिकाभादणसरुआववधस्त्रनयर्कुनसुकायो ॥ मर्दयधिथा ॥ ॐ ऊकाउता ॥ दर्मेष
दाल्य ॥ विगतस्त्रनाआउमर्न ॥ सुयार्धवाक्का ॥ गुनू ॥ नमस्कार ॥ गमयणीया ॥ मोर्धपाणकूजा ॥ नपूजा ॥
मतावन्पूजा ॥ ॐ गत्वायामिसर्वीय ॥ ॥ आसर्न ॥ ॐ आधनादि ॥ ॐ मकनासनायनमः ॥

ध्यानं ॥ ॐ नागयागधर्नदृष्टं ॥ नेत्रोघयतिविगर्ह ॥ गमः कधवर्नयमठातवन्धीमकसर्न ॥ धमनय
र्यनमः ॥ गुणलि ॥ ॐ नमः ॥ ॐ वनू ॥ मया ॥ ॐ उनु ॥ कुमवन्धीयोग ॥ ॐ गता ॥ नमितुं
तिदलभाकपालार्चुर्न ॥ १० ॥ ॐ अयाकुक्क ॥ ॐ तिनवगुदाञ्चर्न ॥ २ ॥ ॐ स्वस्तिन ॥ ६ ॥ ॐ उ
सुस्वस्ति ॥ ॥ धयदीयनेवय ॥ रुलतामूलयतिष्ठा ॥ ॥ तगः स्वस्तिताञ्चर्न ॥ ॐ स्वस्तिनामि
मीता ॥ ॐ तिमर्ध ॥ ॥ यर्जित्यसुकायो ॥ मनुः ॥ ॐ मन्त्रा ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ अथा ॥ गक्रिया
० ॥ द्विष्टिनरुकायद्रुमजिदोलधूनक ॥ अदगव ॥ गुलपुनल्यायकअ ॥ धूर्नं ॥ लिउ ॥ सुस्वस्ति
यर ०० ॥ ॥ धर्धनकात्रशोदासयूजसालगयाय ॥ यूजाआयमागधूर्णादि ॥ अर्धविज ॥
खस ॥ सादुदुर्लभ ॥ लंयून ॥ याधमज ॥ आदत ॥ अगत्वा ॥ नस्य ॥ ॐ ॥ अयवागाद ॥

[illegible]

ब्रह्माद्यः भिवर्त्तकं यधुभ्रमृतस्नानयायकं ॥ लोअलज ॥ एगारवज्जुदने काज ॥ धरुंधू नकानकुसुदविगा
न्रहोजन ॥ ॥ सकिकुदु निर्यकर्म धूनक ॥ दगु लिसर्न ॥ दसदयकं यूजावन ॥ सकलजो भाकु नर
लो ॥ ॥ आगसामे किउक्षमाल ॥ ॥ निर्यकु नयजो विवि ॥ ॥

आ	दिव्य	ग्व ३	मदिक
मां	ग्व २	मटि	
अं	ग्व २	पूल	
वू	ग्व २	मनकट	
वृ	ग्व २	पृथ्वनाऊ	
भू	ग्व २	रूल	
म	ग्व २	नील	
ना	ग्व २	ग्वमंद	
कं	ग्व २	विदान	
ज	ग्व २	रुटकि	

चरुज्जादित्यादियान्त

यन्देविस्वया. ग्व२मृदि

अ.	यकि २ लं
व.	यकि २ आं
आ.	मलिक ग्व २
इ.	पूल ग्व २
वि.	मलिक ग्व २
क.	नील ग्व २
य.	यंदोल ग्व २
मा.	इल ग्व २

धरुभरुस्वस्वमादियारत्त

Handwritten text at the top of the page, possibly a title or header, including the word "संज्ञा" (Sangya) on the left and "यम" (Yama) on the right.



Handwritten text at the bottom of the page, likely a footer or concluding text, including the word "संज्ञा" (Sangya) on the left and "यम" (Yama) on the right.

१. उद्यमानधरु ॥ अदिया, मलिक, मित्र, सामा, मन्त्रि, अंगनया, धनरत्न, वृद्धया, कनकतनयत्न ॥ वृद्धस्यमिया, युवराज, मुकुटा, हनयत्न ॥ अधवाः २ रुटिकधरु ॥ नर्मैधनया, रंनुनीलवत् २ नाइया, नावतयत्न ॥ कंगुया, झल ॥ ३ जन्मया, लुं ॥ धननवयदया ॥ नत्न ॥ ४ अश्वत्थामाया, लुं ॥ बलिया, मन्त्रि, नत्न ॥ ५ द्यासया, उदायत्न ॥ रुतमानया, धनयत्न ॥ ॥ विहीषयया, लोहयत्न ॥ कयया, नील २ ॥ यत्न ॥ यर्नुनामया, विद्यालयत्न ॥ मार्कः १ ॥ ६ युया, हलयत्न ॥ चन्दुविम्बया, हल १ ॥ ७ रुच्यविम्बया, मलिक ॥ २ ॥ अदिया मायासाधय ॥ ८ ममया, नरव ॥ ९ अंगनया, सा ॥ १० वृद्धया, लुं ॥ ११ वृद्धस्यमिया, क मन्त्रि, अधवा ॥ १२ मुकुटा, झल ॥ १३ नर्मैधनया, दादाया ॥ १४ नाइया, रव ॥ १५ कंगुया, झल ॥ १६ जन्मया, रवना ॥ १७ धननवयदया, रथय ॥ १८ अश्वत्थामाया, धीवत्न ॥ १९ बलिया, यलः यति ॥ २० द्यासया, धुजा ॥ २१ रुतमानया, कल ॥ २२ विहीषयया, जामन ॥ २३ कयया, दा यर्नुनामया, रु ॥ २४ मार्कः १ युया, नरवधरु ॥ २५ अश्वत्थामादियारथय ॥ २६ यर्नुनामया, धनमाल ॥ २७ यथया, जालन ॥ २८ जोदासाः १ ॥ २९ वृद्ध २ लोहामा, लोहाया, युवा १ ॥ ३० माल, यथमतय ॥ ३१ सिजलवाता, लाजल ॥ ३२ सवाता, नोयूयात ॥ ३३ नोयूमा, जालन ॥ ३४ यत्न ॥ ३५ अश्वत्थामाया, गत्यदान ॥ ३६ गीथः ॥ ३७ जालरवत् ॥ ३८ आदि ॥ ३९ नोमधी ॥ ४० यरु ॥ ४१ जालनसकता ॥ ४२ रथ ॥ ॥ ॥

[illegible]

ॐ

नां निष्कृयता कले ॥ शुद्धा गुणसमर्प
यः ॥ अथ रक्षणा स्वस्वधित्तमेतद्विधिः
सीः ॥ ॐ स्वस्त्यस्तुतिः ॥ ध्वजं दत्तं प्रसा
दाय ॥ ध्वजं यज्ञं गच्छति यत्र विधिः ॥

अथ कृष्णसूक्तमंत्रं श्री० ॥ वाङ्मनः ॥
यथा२ विधिमनुजकलमानं ॥ ॥
रक्षात्रा उन्नत २८ ॥ वृत्तिरात्रा उन्नत ॥ ॥

नमोऽस्तुते ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥ ॐ संयुक्त
 कल नमोऽस्तुते ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥ ॐ संयुक्त
 महिनाय ॥ ॐ साधनादि ॥ ॐ वृ
 यासनाय ॥ ॐ सिद्धासनाय ॥ ॥
 ध्यान ॥ ॐ सद्योऽयमव्यक्तोऽयमव्यक्ति
 न्दुविम्बः कृष्णः ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥
 श्री ॥ ॐ यकल नमोऽस्तुते ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥
 निर्मलः ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥ यकल नमोऽस्तुते ॥
 ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ वन्दनयुगा ॥ ॐ नमो
 ॥ ॐ यकल नमोऽस्तुते ॥ ॐ ॐ समग्रं ॥
 ॥ ॐ सिद्धासित ॥ ॐ वन्दनयुगा ॥ ॐ नमो
 ॥ ॐ यकल नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥
 ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥
 ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥
 ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥ ॐ नमोऽस्तुते ॥

मत्ताम्रदिन्या नवगुहार्जनं ॥ ७ ॥ अह

ध्या ११

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ततो जन्मयद्विकार्यतं ॥ ॐ जन्मने सफः
 मृषित्वा दिनशुभं यत्तु यद्विदेवनायः
 ॐ दमासनं २ ॥ यव्यं २ ॥ ध्यानं ॥ ॐ ह
 क्काकिनादनासं गाययद्विकार्यतः
 यद्वदसुधनश्चैव जन्मद्वन्द्वमात्र
 दं ॥ ध्यानं यव्यं २ ॥ श्रीरवधुचन्द्रनमि ॥
 ॐ नान्दतेति ॥ वंद ॥ ॐ नान्दतेति ॥
 मो ॥ ॐ मयकमृषयः ॥ ॐ यूनस्तादि ॥
 ॥ ॥ स्तोत्र ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॐ नद्वन्द्वमसंश्रितः ॥ ॐ नद्वन्द्वमसंश्रितः
 वा ॥ जन्मद्वन्द्वमात्र ॥ ॐ नद्वन्द्वमात्र
 ॥ ॐ नद्वन्द्वमात्र ॥ ॥ ॥ ॥

ततो० आदिदल्लोकगालाञ्जनं ॥ ॐ
शाकाग्रमिन्दु ॥ १० ॥ अतिदल्लोकगाला

नमः सरुलं यज्ञा ॥ ॐ वाङ्मयः ॥ ॐ
॥ ॐ त्यादि ॥ ॐ नित्यं च सिद्धिं ॥ ॐ

रातः वागमयन्तु ब्रूयात् ॥ यद्यः ॥ छंद
यस्य सा म ॥ छंदं कृत्वा सुकृतकीर्ति
मित्तवन्त्यस्तु तामृतमृतनानाभिः
रोगान् भोजयन्त्यानिनाशकानि नूनानि
यथायतं दधुः यत्र सप्तमस्तु नाडीः

वञ्जस ॥ यत्रिग ॥ ॐ यत्रिगस्य अक्षयस्य
दीर्घायुत्वाय दक्षिणस्य ॥ लोकस्वान ॥ ॐ
या अक्षयस्य मदनस्य ॥ अक्षयस्य कामाक्ष्याय
य ॥ नामस्य यत्रिगस्य कामाक्ष्याय
य ॥ मालस्य मया ॥ ॐ यत्रिगस्य मया
कायस्य वयस्य ॥ नमस्तुभ्यं चित्तमनस
अवधमस्य मया ॥ लक्ष्मणस्य ॥ ॐ ह्रीः
नमस्तुभ्यं ॥ ॐ नमस्तुभ्यं ॥ ॐ
दक्षयस्य ॥ ॐ दीर्घायुत्वा ॥ ॐ नमस्तुभ्यं
जा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१. अथवीहि। पृथिवीमूर्त्य
 पूर्वसभ। कामा। ॐ शुभ्रकामं
 मासनं २॥ यथा २॥ ध्यानं ॥ ॐ शुभ्रकामं
 शुभ्रकामं वीर्यः रवप्रयानिर्धनयुतः ॥ अ
 शुभ्रकामा सदा शुभ्रं दाता यार्थसूतः
 निवः ॥ ॐ शुभ्रकामं ध्यानयुतं ॥ ॐ
 शुभ्रकामं पृथिवीमूर्त्य श्रीरवमुच्यते
 शुभ्रकामं शुभ्रतयः शुभ्रवीत शुभ्रतयुतः
 शुभ्रकामा लिका धूयदीयदलनैव यादि
 संकल्पसिद्धिनु ॥ वदः ॥ ॐ शुभ्रकामं
 ॥ ॐ शुभ्रकामं जातनमा शुभ्रकामं
 वानमिहाचमू। वदवदांगसंयुक्त शुभ्रकामः
 कामानमानमः ॥ शुभ्रकामादि ॥ ॐ शुभ्रकामं
 शुभ्रकामाचनं ॥

ततः यत्तु नामार्चनं ॥ मंगवीदि ॥ छलनसु ॥
 छं यत्तु नामाय विष्णु मूर्त्तयं रमासनं
 ॥ यथां ॥ ध्यानं ॥ छं यमदग्निं कलौ हृतं
 दामोक्षं न समयति ॥ यत्तु नाममदं वेदं
 यत्तु वनदक्ष त्रिं ॥ छं यत्तु नामाय वि
 ष्णु मूर्त्तयं ध्यानं यथां ॥ छं यत्तु नामाः
 यत्तु विष्णु मूर्त्तयं गन्धर्व न निला कतः
 नील यक्षाय वीत नील यक्षमा लिकाधुः
 यदीय रुलने वं आदि संकेत्य सिद्धिः
 सु ॥ वद ॥ छं यथा यत्तु नत् ॥ आयत्तु
 ॥ छं कारुवीर्य विना मय यमदग्निं क
 लौ हृतं ॥ कतं त्रिं कसियं यत्तु यत्तु नामाः
 मायवेनमः ॥ अंगगन्धादि ॥ रं नित्यः
 यत्तु नामार्चनं ॥ ॥ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

नमः सुमिष्टुजा ॥ ॐ सुप्रसिद्धमिन्द्रस्यदिसि
नसि विन्धुध्या ॥ विन्धुस्य सुवनस्य धरुः
पृथिवी अक्षु पृथिवी देवस्य पृथिवी माहि
३ श्री ॥ ॐ नमः सुमिष्टुजा ॥ ॥ ॥

॥ दीये ॥ छं नं जा सि ॥ रु ल ॥ छं याः रु
लिनी ॥ ने व र ॥ छं म न्न य न न ॥ ग म्

श्री ॥ ॥ वीरि ॥ ॐ वीरयन्त्रम् ॥ ॥ नः
नमो मध्वी ॥ ॐ याः ॐ मध्वी यूर्ध्वजा नाद
वयस्त्रियुग्मयुग्मः मननवयुग्मसह
नतंधामा निसकव ॥ ॥ रुली ॥ ॐ या
॥ रुलिनी ॥ ॥ यनिका ॥ ॐ मनो हूनिः
॥ रुनिकेल मयूजा ॥ ॥ ॥

ततः पूर्वदिनि यजमानस्तृप्तिकामन
 स्मिता ॥ निर्मकन ॥ अत्र काहनं ॥ अल
 वनि ॥ अं भूध्रवाच ॥ मतरुता उचानव
 य ॥ अं स्वस्तिनामिमीगनि ॥ यजमानस्त
 नयाचक ॥ पूर्ववत्तमकुं ॥ अं समुदा
 दूर्मि ॥ ॥ मृदिका ॥ अं भूध्रकानं ॥ कः
 माय ॥ अं यक्षयक्षगच्छ ॥ दादिक
 लननस्तानयाचक ॥ अं समुदायत्वा ॥
 यत्नव ॥ अं रं दर्विष् ॥ यद्मादि ॥ अं व
 द्मदीत्यत ॥ ॥ यश्चिमकलनस्तान ॥
 अं समुदं अं वा ॥ कसं ॥ अं नमः भूमवा
 य ॥ यश्चिमवृ ॥ अं वाचकं शुद्धमि ॥ ॥
 ॥ ॥ अत्र कलनस्तान ॥ अं समुदं
 त्वा ॥ यश्चिमवृ ॥ अं भूध्रवत्वा ॥ वीदि ॥
 अं वीरुय ॥ भूध्रमो अधी ॥ अं या ॥
 भूध्री ॥ ॥ भूध्रवत्वा ॥ अं यां रं ली
 नि ॥ भूध्रनि ॥ अं भूध्रमि ॥ रायक्षस्तः
 ॥ अं भूध्रनि ॥ यत्निष्ठा ॥ रं निस्तान ॥

स्नान आद्योपसंगत्य काय धादिनव
 क्षणकाय ॥ ॥ मंत्रवसननियः
 काय, लासालवयक्त्या उरुनसखि
 कसमाने ॥ ॥ कृष्णनयूनवाक्षमवय
 जमानवधियकं कामयाय ॥ गित्तः
 न ॥ ॐ हः स्वाहा ॥ ॐ वक्ष्यस्तु न ॥ ॐ
 पुवः स्वाहा ॥ ॐ वं द्यविष्णु ॥ ॐ स्वः
 स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ गवाय ॥ वलंगगुरु
 मयावत्वाय ॥ ॐ नितित्त ॥ धन ॥ ॥

धनयजमानस कल ॥ दिव्याननकं ॥
नवगुरु ॥ अं श्रीं ह्रीं मां ॥ आदिनयूजाय
वर्क ॥ ॐ आदिद्यादिनवगुरुयः ॥ ॐ द
सासनं २ ॥ यथा २ ॥ नवगुरु ॥ नयन
सिद्धयस्तु यदीनधुयदीयान् ॥ अगुः
गन्ध्यादिद्यादा ॐ ॥ अर्च विचकं ॥

अहमगाडलीआदधुम.

[illegible]

मं० नाय यत्तु द्विदवताग्र्यादिनः ॥
 मुयमृषिगिष्णुद्वन्द्वः सवितादवताग्र्या
 कनगणसहिताय अजमानस्यहीमन
 धावमोदणः आदित्याय ० ॐ दमर्चः ॥
 गृहाण स्वाहा ॥ हायके ॥ कननके ॥ ॐ
 वन्दुकय द्यमर्का ॥ नकात्यलसम
 यतः लोकना ॥ अजगदीयः ॥ मर्कियः
 कसुरास्वनः ॥ ॐ निआदित्याय विधि

कवचं यदादिमलिमूरवधुमकल्लन
अदक्षिणदिगीश्वराय शिकोपमस्तुला
कनयं भूगभयदवाभिदवता स्कन्दाय
एभिदवता दिक्षे विनूयाद्वपुः भिगभय
नीकन्दो भयदवता लय कनगपसहित
अतिवाक्यं ॥ भूगभय रूंदमर्थ ॥ स्त्री
॥ ॐ धनदीगर्भसंस्तोत्रं वन्द्यजीवस
मयला ॥ न किंददाकुमनिर्यं कसार्ग
नकः सदा ॥ अगुगन्धदि ॥ ॐ नमो भूग
र्ध विधिः ॥

नवभूयिष्ठुना हिमस्वनिखाग्रयुद्ध
 नदिगीधनाययद्वाकुनिमलुलायवृद्ध
 स्यानिदवाधिदवतावृद्धराययधिदः
 वताययमदनिमृविनिवृद्धदोवृद्धः
 स्यानिदवतायकनगलसहितायति ॥
 वृद्धस्यतयं दमर्धं ॥ सा ॥ ॐ सिः
 वलीकत्रिकाकात्रः सुगमययुद्धा वि
 दु।दवमन्तीमहातजा गुनः मन्किं
 यद्धु ॥ अगन्धदि ॥ ॐ निवृद्धस्य
 ध्वविधिः ॥ ॥

नतः सुकार्यं ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ सुकाः
 अरागवतदरा हवाययगुलुकनवः
 म्याजानाययुद्धनदराययवृद्धराजा
 नअगुलुकवृद्धयिध्वीहिमस्वकाटकाः
 नययुद्धदिगीधनाययवृद्धसुमगुला
 कनयगुलुकदवाधिदवतायगुलायय
 यधिदवतल्लायवनिवृद्धविहृद्धद
 ॥ सुकदवतायकनमेहितागलेयति ॥
 सुकायं दमर्धं ॥ सा ॥ ॐ कानक
 सुन्दरकान ॥ सुकवृद्धविहृद्धनः ॥ म
 निददोवृद्धानिहः देहमन्तीसुगमव
 ॥ अगन्धदि ॥ ॐ निवृद्धस्य विधिः ॥

नतः ननेध्वार्धं ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ नः
 नेध्वार्धसोनादरा हवायमाधयु
 कायुद्धाजानायमादिनीनदरायका
 म्यवरगमययुद्धजानयनीलवृद्धः

ययधिमाहिमस्वयमहातजायययुद्ध
 मदिगीधनाययदीर्घाकुनिमलुलायनने
 गुनदवाधिदवताययमययधिदवताः
 ययाजानायययुद्धवृद्धसुमययगुली
 कन्दः ननेध्वार्धवतायकनगलसहित
 यं दमर्धं ॥ ननेध्वार्धयं दमर्धं ॥ सा
 ॥ ॐ नीलाययवृद्धल्लयमन् हिनाजानस
 मायिका ॥ ननेध्वार्धयं सां सदा मन्किः
 ययद्धु ॥ अगन्धदि ॥ ॐ निवृद्धस्य
 ध्वविधिः ॥ ॥ ॥

नतः नादार्धं ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ नादवम
 लयदरा हवायकाहिगुलुकवृद्धसुम
 जानाययवृद्धनीनदराययावीनरायय
 सुदजानययुद्धवृद्धययधिमाहिमस्वः
 नीलाययनेध्वार्धदिगीधनाययमकनाकः
 निमलुलायनादवाधिदवताकालायः
 ययधिदवतारासर्धयवामदवाः
 विगमयणीकन्दानुडादवतायकनगल
 सहितायतिवाद्ध ॥ नादवृद्धदमर्धं ॥
 सा ॥ ॐ अतपीयय सकार्धनीलाक
 ननिरः सदा ॥ मन्किदेदावृद्धानिहः
 नादवृद्धार्धमर्धनः ॥ अगन्धदि ॥
 ॐ निवृद्धस्य विधिः ॥ ॥

नतः कनार्धं ॥ ॐ अयादि ॥ ॐ कनवः
 पीयवृद्धाहवायमाधयुद्धदिनीयायां
 जानाययवृद्धनदराययमनिगाना
 ययुद्धजानययुद्धवृद्धययधिमाहि
 मस्वनीलाययवृद्धययधिगीधनाः

अथ प्राकृतिमनुजायकमुद्रादयः
अधिदवताय विरुगुकाय पुष्यधिः
वताये वृद्धा वृद्धा विमयाय वीर्यं कृत्वा
प्रदवताय नृगलसहिताय नित्याय ॥
कनकं वंदमर्चं गृहाण स्वाहा ॥ का॥ ॥
ॐ सिद्धयन्त्र विनाकात्रकयदानिहाय
य। कनकं नृगलसहिताय नित्याय ॥
अथ गुरुभूगन्धदि॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ततः जन्माद्यं ॥ ॐ अथादि॥ ॐ जन्मने
स्वक मयाय स्ववलाजगाय स्वनक
गाय स्वसि कावृताय ॥ अथ वृद्धा
लीलाय ययिमाहि मूरवाय जन्मने
दवतायाधिदवताय सयययययधिः
दवताहि नृगलसहिताय नित्याय ॥
ताय नित्याय ॥ जन्मने वंदमर्चं ॥ का॥
॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
ततः कनकं ॥ अथादि॥ ॐ अथादि॥
दवताय नित्याय ॥ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नित्याय ॥ ॥ ॥ ॥



ततः मृगयार्थं ॥ ॐ अथादि॥ अजम
नस्य हीमयवप्राह नितिमयर्थं मृगय
यकल मय वंदमर्चं गृहाण स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॥



उर्वकमं गल ययार्थं ॥ ॥ ॥
वलि, रगमस, मरगमल, कीमानी

सूर्यादिमं अथ विरुगुकाय पुष्यधिः
रुको विरुगुकाय ॥ ॥ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥

कवलं स्ववदिलकावतने ॥ ॐ अथादि॥
लयुष्यदि॥ ॥ मधुलकस्वासीय
॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥ ॥
मृगयार्थं ॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥ ॥
॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥ ॥
॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥ ॥



ततः स्वकमाद्यं ॥ स्वानकनकं ॥ ॐ
अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
माशनं ॥ ॥ अथादि॥ ॐ अथादि॥
नृगलसहिताय नित्याय ॥ ॥ ॥
यनेव आदि॥ ॥ ॥ ॥

ततः अथादि॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥
स्वानकनीय ॥ ॐ अथादि॥ ॐ अथादि॥

मामुनिःश्रद्धा धर्मादिवर्गसंयुतः। गृहा
 लार्थं मया दत्तं मायुः कीर्ति यदाह्वय ॥
 अजमानस्य हीमन्तध्वजोऽयं धर्मः ॥
 श्रुत्वा मन्त्रं दमर्चं गृहा लस्वाहा ॥ श्रीः
 ॥ ॐ ॥ अथ श्रुत्वा माया ॥ ॐ विनायुः सः
 शिनामिहं विद्यातागुनीधोयुः ॥ कुरुः
 माध्वस्तमनसा मसुन्धतनमोऽमुने ॥
 अथ गन्धमादि ॥ ॐ निःश्रुत्वा माया ॥ ॥

नमो वल्लभाय ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ ल गृहा लः
 वाच्यं कः पत्र कीनाम्बुवितं ॥ गार्किकः
 श्रीगुमल श्री वृद्धि मधुसूदामम ॥ वाच्यं
 पूज्यं वर ॥ वलयं दमर्चं गृहा लस्वाहा
 ॥ श्रीः ॥ ॐ अथादिवलयानलोकवलयः
 त्वं वलयं ध्वजं ॥ तथा विदेहिमानिह्यं
 दयन्तु वलयं वलयं ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः
 वल्लभाय विधिः ॥ ॥ ॥ ॥

नमो व्यासार्थ ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ व्यासाय
 मुनियुक्तं विद्यालोकनस्य सिन्धुसं ॥ दी
 अमानमिदं धर्मं गृहीत्वा ललाटारुह ॥
 वाच्यं ॥ व्यासाय दमर्चं गृहा लस्वाहा ॥
 श्रीः ॥ ॐ सर्वं मा सुप्रसादाय नमो न
 कीर्तिस्तुतिः ॥ पत्रकरीति मा सुकृतः
 मरुत्वा सदैवतः ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः
 व्यासार्थ विधिः ॥ ॥ ॥ ॥

नमो रुद्रमकार्य ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ रुद्र
 मरुत्वा सदैवतः ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः

धर्मसमयादहं विद्युता कथा मुने ॥
 वाच्यं ॥ रुद्रमरुत्वा सदैवतः ॥
 श्रीः ॥ ॐ नमो रुद्रमकार्य ॥ वाच्यं
 ललाटारुह ॥ रुद्रमूलं ललाटीति रुद्रमसिन्धु
 मोऽमुने ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः रुद्रमकार्य

नमो विहीनधर्म ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ विही
 नधर्ममकार्य ॥ ललाटीति रुद्रमकार्य ॥ गृहा
 लदमर्चं ममयाय दमर्चं ॥ वाच्यं
 ॥ विहीनधर्म दमर्चं गृहा लस्वाहा ॥
 श्रीः ॥ ॐ विलस्यं कलसज्जितं लंका
 वासस्तिसदा ॥ नाकसाधियतिद्वयं नः
 मरुत्वा विहीनधर्म ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः
 विहीनधर्म विधिः ॥ ॥ ॥

नमो कृपार्थ ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ कृपाय
 दमर्चं धर्मधर्मद्वयं ॥ रुद्रमकार्य
 ललाटीति रुद्रमकार्य ॥ वाच्यं
 ॥ कृपाय दमर्चं गृहा लस्वाहा ॥ श्रीः
 ॥ ॐ कृपाधर्मद्वयं ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः
 ललाटीति रुद्रमकार्य ॥ अथ गन्धमादि ॥ ॐ निः
 कृपार्थ विधिः ॥ ॥ ॥

नमो यमुनामार्थ ॥ ॐ अथादि ॥ ॐ यमु
 नाय नमो यमुनाय ॥ मया दत्तं यदाह्वय
 ॥ विष्णु वरुण नमो यमुनाय विधिः

वः॥ वाक् ॥ यन्मुग्धासायं रं दस्यं गृहाः
नस्वाहा ॥ स्मार्तं ॥ ७ समूहलक्षणाः
यः नं जमानलसं हव । स निर्वृत्ति या
यानि । जामदग्ननमास्तुतं ॥ अत्रगर्ध
दि ॥ १० नित्यं मुग्धासायं विधिः ॥ ॥

ॐ नमो मार्कण्डेयार्य ॥ ॐ अथादि ॥ मार्क
ण्डेयमुनिः प्रसन्नस्त्वर्गवाप्तुं लघुदाम
भूयः गृहलभयदहं नमः नमोऽस्य
व ॥ वाक् ॥ मार्कण्डेयार्य इत्यमर्चः गृ
हलभयदा ॥ स्तोत्र ॥ ॐ मार्कण्डेयामः
हारागमः मार्कण्डेयामहामुनिः नमः
मिथयनारुक्ताचिनः प्रीयन्मास्तुतः
॥ अथादि ॥ ॐ नमो मार्कण्डेयार्य

[illegible]

धरुहृयादि भूधरुहृयादि भूधरुहृयादि

ततो यजमानयज्ञं सिंहाचारं गच्छित्वा
 घृण्योद्यकं नभूरिषं कलशं वनरुतिं काय
 ॥ ॐ दंष्ट्रां स्वाहा ॥ मन्त्रं गच्छान्त्वा य ॥ ध
 कादिन किं नीन ॥ ॐ स्वस्ति नो मिमी ॥ स
 न स वस्तु गच्छावत्वा य ॥ ॐ वसाः य विरुमः
 सि ॥ वस्तु विय ॥ ॥ यत्रिलंठय मिम वि
 य ॥ ॐ यत्रिधस्थि ॥ ॥ वंतालि विय ॥ ॐ
 युवा सुवासा ॥ ॥ यज्ञं ॥ ॐ गभवदुयाव ॥
 ॥ ॥ ऊनिमि ॥ ॐ जनं न्दाय ॥ ॥ स्वाकः
 स्वात ॥ ॐ वाभूरुर्जमदग्निः प्रहायकाः
 मायं न्दियाय ॥ नाम हं उमि गृह्णामि जं सै
 सावरु रगनय ॥ ॥ मालं स्वात ॥ ॐ यय
 ध्यात्र सोमि न्दुय ॥ ॥ लं वत ॥ ॐ दिनं
 गर्ह ॥ ॥ वन्दन सिद्धं सगुप्तं नीर्वाद ॥
 मरुभूतमिष्टमिष्टा ॥ ॥ ॥

॥ नमो वाङ्मयं भूति विद्युत्किष्काताः
॥ य॥ उ० मनादूति ॥ मायहात ॥ यजमान



ममोयजमानसकयजुजायक ॥ यज्ञया
डकनसयाक न गवय न ग्वल न गवाव ॥
वद ॥ ॐ पुनूदस्माद्विष्णूय एनसमहि
मानं । एकयेदीद्वियदीतियदीयदुष्यदी
यश्च्यदीअस्यदीसकयदीदुवननियः
ॐ स्वाहा ॥ ॐ निसकयदजायविधिः ॥ ॥



नमोऽस्यै विष्णवे नमः ॥ ॐ नमः शिवाय

पूर्यते ॥ जंजमानमथमदनं ॥ वाञ्छ ॥
 ॐ भूय येनोदितिकमः ॥ पूर्यते ॥ ध्वं
 दनदनं ॥ ॥ ॥ ॥
 इति कतकोदावकननं ॥ ॐ यनयका ॥
 ॐ देवोक्त्यावनिष्ठमिभयवोदुष्टो
 मिदवताहलोकायुधमनथाधियतय
 सु र्थाय ॥ ॐ द्यादियुर्व्वत ॥ न द्या
 आरथं पूजाया ॥ ॐ तिनथं पूजा ॥ ॥

नमो यजमानेनमस्तु वदनेन ॥ ॐ क्व वसति
 ध्वं त्वय नमस्तु वदनेन ॥ ॐ क्व वसति
 त्वादां वदनेन ॥ मया यथा पुकावतीत
 तं जीवनेन यः ॥ ॐ क्व वदनेन ॥ मया यथा
 रवदाध्यायकं नमस्तु वदनेन ॥ ॥

धननथमजोदावयय ॥ ॐ यन्मददामु
 तयुतां क्विदात्रादिकि यनथं ॥ त्रथसु
 र्थाय वदनेन ॥ तनवादिद्युविकि ॥ यथा
 त्रथं समानोदं ॥ कदायायं पुनस्तानि ॥ मया
 शक्तिः सदाभक्ता नन्दनियत्ककिंकरीः ॥
 ॥ ध्वं मिजनया ॥ ॥ ॐ यन्मददामु
 नुतानां यः क्विदात्रादिकि यनथं ॥ त्रथ
 त्वादां वदनेन ॥ समानोदिकि यनथं ॥
 ॐ जभनथं समानोदिकि ॥ ध्वं मिजा
 जनया ॥ ॥ ॥ ॥

नमो यजमानस्य किका सने सि त्वावं प्राप्त
 कंनं ॥ कंननकंनथसपूजा ॥ ॐ श्रीमन्
 अधियतयसु र्थाय ॥ ॐ दमासनं ॥ यथा

२॥ ॐ वद ॥ कंननदसिन्धुप्रयज्ञायवी
 तयुष्यध्वं दीयद्वापुनमनत्रियः
 कंन २४ ॥ ॐ दं दलपुष्यताम्युल्लेखा
 दि ॥ भूय यथा कं ॥ सन्वसदुदुतस्य ॥ ॐ
 मयवात्रादुद्यादि ॥ ॐ भूय यथा ॥ ॐ यः
 जमानस्य श्रीमन्मथवत्रादुदुतस्य ॥
 ॐ दमर्चं गृहाण स्वाहा ॥ ॐ श्रीवदोना
 मयुष्यानि नत्तानि विविधानि च ॥ श्रीम
 त्रध्वं सुसंयाक मिदमर्चनेन मोनमः ॥ श्री
 रवपूजा नमस्तु ॥ ॥ श्री ॥ ॐ सय
 सयतिवर्माणि माससकदिनानि च ॥ न
 मि श्रीमन्मथनाम सन्वयाय यथा ॥ श्री
 ॥ ॐ नकां नृजासनम ॥ मया गुरुलोकसिद्धं
 हानं समस्त जगतामधियंरुजामि ॥ यथा
 द्यावपृथिव्यं वदध्वं कंनोदं मागिभुः
 मोलिमन्मन्त्रिभिरितुं ॥ ॐ भूय यथा
 दि ॥ ॥ ॥ धनदं गुरुदितसाह
 दं गुरुलिमात्रक ॥ दी दामदतसां यथा
 लिङ्गं कंनं ॥ श्री द्याय ॥ ॥ ॥
 ॐ तिस्रं यथा पूजा ॥ ॥ ॥

धनगुरुसदिकि ॥ नमो यजमानस्य कल्लं
 तयकं ॥ नवगुहादि ॥ भूय यथा ॥ दिवि
 कंनयाय ॥ ॐ द्वायं नमस्तु ॥ ॥ ॥
 दानयात्रकं ॥ भूय यथा ॥ यथा
 मानयगुमासिमुख ॥ वाञ्छना रिमुख ॥
 कंननकं ॥ ॐ भूय यथा ॥ श्री द्याय
 मिथयध्वं वत्रादुदुतस्य ॥ ॐ दमासनं ॥ यथा

ॐ स्वस्ति ॥ ॐ कादात ॥ ददितुं मा धन्युवी
 दि ॥ अमी दीद ॥ ॐ वा दानमः ॥ स्तुति ॥
 ॐ धर्मयुक्तसुवासितपियसदा श्रीरव
 मुदई हं वि ॥ अर्घ्यं का श्री नवम्ययुय
 निनतः श्रीवत्सदानंयूनः ॥ यद्गमं स्तुः
 नमः श्रीमवर्तुदितरवप्रकलरासितडा
 मावाच्यं सुनेमामिगनतंयुधीमया
 मूर्तय ॥ ॐ गगनादि ॥ ॐ गगनादि

वलिमूर्तयवा दानमयति ॥ यद्गका कच
 नन कस्ययक्षायवीतनूयक नत्रयुयः
 एवादि ॥ कृष्णकतन ॥ वाच्यं ॥ ॐ पुं पुरी
 कजलोत्यनन दीवाससुरवयद ॥ य
 पुत्री कचदाननकी हिमे गीयुयद्वय ॥
 उतनयु पुत्री कदान ॥ ददस्व ॥ ॐ अय
 ॥ यजेमानस्थिति ॥ पुं पुत्री कदानं पुत्र्यम
 हंसपुदद ॥ स्वस्ति ॥ ॐ कादा ॥ ॐ सिद्धा
 धुवीदि ॥ ददितुं मा धन्युवी ॥ ॐ मदिः
 यी ॥ स्तुति ॥ ॐ मासिधुयकम पुमोस
 मेहितयकान्नसंयुक्तं यक्ष्मा रगवः
 दवदत्रत्तमनिकं वं नमनामूर्तिय
 गाजीवासनयदरुमरुयं कस्ययुति
 कोमदा ॥ दानं यद्गसुचनन पियतनः
 वन्दसदावलि ॥ ॐ गगनादि ॥ ॐ ति
 वलिदानं ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ वितीयदामूर्तयवा दानमयति ॥ रगमा
 चनचनयवीतयक्षायवीतनूयक नत्रयुयः
 कृष्णकत ॥ ॐ दद विधुतीनित्यं धः
 ॐ गगनादि ॥ तस्मात्तु जयदाननः

जयंरवमिसर्वादा ॥ ॐ जदानं दानयं ॥ ॐ
 ददस्व ॥ कृष्णकत ॥ अय ॥ यजेमानस्थ
 ति ॥ ॐ जदानं पुत्र्यमहंसपुदद ॥ स्वः
 स्ति ॥ ॐ कादा ॥ ॐ ददितुं मा धन्युवी
 नी दीद ॥ ॐ यक्ष्मा रगवः ॥ स्तुति ॥ ॐ यी
 मां पुः कमलासनरुवनदः ॥ कस्ययुदान
 पिय ॥ कस्ययुक्तकलसतनदधुनानीवा
 नमनं वलिः ॥ धुयसर्जनसंयुवीनविम
 लं कर्णयन पुत्रियेन ॥ ददितुं मा धन्युवी
 सुयधिमं यामं सदा मरुतः ॥ ॐ गगनादि
 दि ॥ ॐ ति यामदानं ॥ ॥ ॥

रुनमानमूर्तयवा दानमयति ॥ कृष्णकत
 ननयकयक्षायवीतनूयक नत्रयुयः
 कृष्णकत ॥ ॐ ददितुं मा धन्युवी ॥ ॐ
 ददस्व ॥ कृष्णकत ॥ ॐ अय ॥ ॐ ददितुं
 मूर्तिकमृत्तु मूर्तिकदवीसमगलं सर्वनी
 धमिनीनित्यदाननसंयुक्तं कलमदा
 नं पुत्र्यमहंसपुदद ॥ स्वस्ति ॥ ॐ कादा ॥
 कलाववीदि ॥ ददितुं मा धन्युवी ॥ ॐ यी
 न ॥ स्तुति ॥ ॐ यामोयक्ष्मा रगवः ॥ य
 नं संधुक्तमूलं दलं धुयं पुत्रुनं कस्ययु
 यकत्रोवालयामाद्यद ॥ ॐ का मूर्तिक
 गतिवीरिद्वाननामस्यय पुद ॥ ॐ गग
 नादि ॥ ॐ ति रुनमानदानं ॥ ॥ ॥

ॐ वितीयदामूर्तयवा दानमयति ॥ रगमा
 चनचनयवीतयक्षायवीतनूयक नत्रयुयः
 कृष्णकत ॥ वाच्यं ॥ ॐ यामगन

श्रीमाराजमनितोमनसि नवनं नी
 निरुवायाम ॥ १

[illegible]

ला०। द्वा कालस्थाननायकालावकायक
॥ वाक्स्थानस्थक्किवाचनं ॥ गरीवादिदकाः
वायुधकाः ॥ ॥ द्वाजस विधिः थल
प्राज ॥ ॥ विजयथायायामविधिः ॥ ॥

[illegible]

इति काव्यम् ॥ वाङ्मनश्च वाङ्मनः ॥
 यजमाननक्षत्रकसंघलगावजानकं
 म ॥ वाङ्म ॥ यजमानस्यहीमनश्चवनाकः
 नकर्मनिधिरूपसंघर्षुर्दुर्गतिरुर्गमस्तु
 ॥ ॐ देवाभ्यो ॥ ॐ सन्मूर्ध्नि नमो ॥ याम
 साय ०० ॥ मधुल ॥ स्त्री ॥ भूगुप्तामी
 द्वादि ॥ कलभ्यामी द्वादि ॥ मधुलवि
 सर्जनं ॥ वक्रसर्पितविसर्जनं ॥ रुभ
 नातिलकं ॥ कलभ्यादिविसर्जनं ॥ ॥
 अतिथेकचन्द्रतामी द्वादि ॥ रुला
 तिथेकं ॥ अतिथि ॥ ॐ नमो ॥ अति
 ध्या ॥ ॐ मतादुति ॥ नायको ॥ कलक
 नसाय ॥ यकविसर्जनं ॥ सूर्यासा
 दि ॥ ॥ वाकं वियसकलकं ॥
 जेहाउयावधिय ॥ ॥ ॥ ॥

नतः चिदांशोऽदधत् २०० हृदयतादित्याः
 रुद्रदिग्भिरगच्छन्तं जयं योजय ॥ लिङ्गां
 साङ्गकलामदिच्छन्तं योजय ॥ रगुज्ज्वल
 भस्मीमात्रां धानसङ्काय ॥ ॥ मन्त्रा
 धवधिधिनरुद्रासङ्काय विरयक. गलसस्त्रि
 कथायावसङ्काय नादिशाम् ॥ ॥ ॥
 ०० तिलीमन्त्रावत्राहन्तयन् विधिस्मार्क ॥

यद्गो निरवात्र नद लो यद्गदयकात्र थन
 यीदगुलि वृद्धवतादियेक वाहनद
 यकं नो रुतं ॥ १०० तिष्ठ उथी ॥ स २१४ विष
 श्रीनृपमं कत्रदयोलिरवत् ॥ मुत् ॥

६८७॥ सकसक निवर्षा निमाससक दिनानि
 यत्तस्मिन्हीमन्थनामसर्वथायक श्रीरवस्त ॥
 ६८८ ला १०५ १०५ हीमन्थ ॥ १ ॥ अस्यानी
 निवर्षा निमासाद्य हृदिना निव. महानथ
 निविरद्यात्तसर्वथायक यायव ॥ ६८९ ला
 ६८९ मस्तानथ ॥ ॥ अस्यानी निवर्षा निमा
 साद्यत्तानि मस्ताना स रुच्यत्तु स रुच्यत्तु
 नात्रागं पापमन्थय ॥ ६९० ला ४५ ४५
 रुच्यत्तु ॥ ॥ नवनव निवर्षा निमासादि
 नतथेवत्तु देवन्थ निविरद्यात्तु रुच्यत्तु
 पून्यत्तु ॥ ६९१ ला १०५ १०५ देवन्थ ॥ ॥
 ६९२ ला १०५ १०५ मास्तान्थ दिन
 मस्तान्थ पाकं दत्त रुच्यत्तु मन्थिवं ॥
 ६९३ ला १०५ १०५ महा देवन्थ ॥ ६९४ ॥

द्वितीयः